International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 06-04-2020; Accepted: 07-04-2020; Published: 18-05-2020
www.hindijournal.com
Volume 6; Issue 3; 2020; Page No. 09-11

वैश्विक नव्य आधुनिकतावाद की चुनौतियाँ

श्रवण कुमार
सहायक आचार्य (हिन्दी), III/2एविश्वविद्यालय आवास, सेक्टर–ण्ए रेजीडेन्सी रोड़, रातानाडा, जोधपुर, राजस्थान, भारत

प्रस्तावना

आज भूमण्डलीकरण के दौर में अहमन्यता इतनी बढ़ गयी है कि व्यक्ति आधुनिकता से संक्रमित हो गया है। एक ओर कविता के बदलते हुए प्रतिमान, दूसरी ओर पूंजीवाद की धौंस, मध्यमवर्गीय जीवन यथार्थ का संघर्ष, इसके बीच में स्वत्व की पहचान तो दूसरी ओर उपभोक्तावाद का तिलिस्म के बीच उत्तरसंरचनावाद एवं उत्तरआधुनिकता का नव्य बोध की टकराहट मानव जाति के विभिन्न वाद विचार, इतिहास, पूंजी का भगवान भी मर गया है। आज परिवर्तन का दौर है। कला–दर्शन–साहित्य–तन्त्र सब बदल रहा है और नये संस्थान, नए सामाजिक, राजनीतिक तकनीकी के केन्द्र उभर कर सामने आ रहे हैं। नीत्थे ने यह घोषणा कर दी कि 'ईश्वर मर गया है'। हालांकि विकेंद्रीकरण द्वारा विभिन्नताओं को एकीकृत कर रहाहै। मनुष्य जाति में परम्परा, भाषा–विश्वास, लोकरूढ़ियों की विभिन्नताओं के बाद एक मनुष्य संवेदनहीन हो गया है आज सामाजिक मान्यताओं में धर्म, मिथक, पराभौतिक, कल्पनाओं, मन्त्र–तन्त्र का जाल सब नेस्तोनाबूद हो गया है मनुष्य आणविक विनाश की ओर बढ़ रहा है। भारत में जातिवाद के दंश के कारण दमन और क्रूरता का ताण्डव आज हाशिया का समाज झेल रहा है। आज वैचारिकी एवं नव्य काव्य सृजन से मानव का विश्वास डगमगा गया है। आज हमारे लिए कुछ चुनौतियाँ हैं जिनके देश की भाषा, जातिवाद, धर्म, धर्मांधता विभिन्न देशों की दहशत एवं क्षेत्रवाद के झगड़ों ने मानव जाति के भविष्य को अन्धकार में धकेल दिया है।

आज हमारे सामने कुछ प्रमुख चुनौतियाँ उभर कर सामने आयी हैं वह ये हैं

1. क्षेत्रवाद, 2. आभिजात्यवाद की दहशत, 3. बहुलवादी झगड़े, 4. प्रजातन्त्र की सुरक्षा के खतरे, 5. मीडिया, 6. औपनिवेशिक गुलामी, 7. नस्लवादी भेदभाव, 8. नव्य पूंजीवाद छल–छद्म युक्त अवधारणा है, 9.राजकीय शिक्षण संस्थानों के खतरे, 10. विखण्डनवाद, 11. उत्तर संरचनावाद।

आज इस ऊहापोह के युग में किसी भी जाति के मानस में 'सामुहिक अवचेतन' के रूप में उसका अतीत आद्यबिम्ब बनकर विद्यमान रहता है यह मनुष्य की सद्य–प्रसूत नव्य सोच का ही परिणाम है कोई भी विचारधारा नव्य रूप लेकर हमारे सामने आती है किन्तु उसका आद्य बीज या रक्त बीज भाव इतिहास के गर्भ में छिपा रहता है।

1. क्षेत्रवाद – भारतीय अवधारणा 'वसुधैव कुटुम्बकं' में विश्वास करती है किंतु यहाँ विदेशी देव तुल्य है किंतु भारतभूमि का एक शूद्र हिन्दू पापी है, अछूत है, वह उस वसुधैव के कुटुम्ब का हिस्सा नहीं है। क्योंकि उत्तरसंरचनावाद सौन्दर्यवादी सृष्टि करती है किन्तु दिखने वाली प्रत्येक सुवर्ण वस्तु सोना नहीं होती है। यह क्षेत्रवाद भी आज दिखावा हो गया है। आज बिहार मध्यप्रदेश में रहने वाली जनजातियों की यातना की ओर ध्यान क्षेत्रीयता के कारण ही गया है राही मासुम रजा का उपन्यास 'आधा गाँव' एक प्रदेश विशेष के मुसलमानों की समस्याओं – शंकाओं को इसी दृष्टि से उठाता है। इसी प्रकार शिव प्रसाद सिंह का नीला चाँद में भी क्षेत्रीयवाद या स्थानीयता को महत्त्व दिया गया है। आर्यों का क्षेत्रवाद उत्तर कुरु (रुस) है, आमु दरिया गंज है, वोल्गा है जिसे काल्पनिक रूप में स्वर्ग, अन्तरिक्ष या ध्रूव देशवासी एवं चंद्रलोक के एलियन्स के रूप में मानकर क्षेत्रवाद का दंभ भरते हैं – 'हम भूमि को ही स्वर्ग बनाने आये हैं।'

2. आभिजात्यवाद की दहशत – आज राजस्थान में प्रत्येक जिले में कोई न कोई दलित व्यक्ति की बेरहमी से पिटाई कर दी जाती है, अराजकतावादी दौर तैयार किया जा रहा है। जो सदियों से पहले चला आ रहा था।

'आचार्य नेत्र बंद किये हुए हैं।
भरी सभा में द्रोपदी का चीर हरण हो रहा है
सव्य साची मौन है।'

वर्तमान युग में भी महाभारत के अन्धे युग की पुनरावृत्ति देखने में मिलती है। विश्व की दो शक्तियाँ पूंजीपति एवं मजदूर या मध्यम वर्ग के रूप में व्याप्त है इस संघर्ष में अभिजात्यवाद की जीत होगी –

'दो सुन्दरियाँ लड़ रही हैं एक गजगामिनी है
दूसरी हंसगामिनी।
एक दिन उनके प्रेमी संसार के दो वर्गों में बंट जायेंगे।
उस समय या तो महासंघर्ष होगा या विश्वयुद्ध।।'[1]

आभिजात्यवाद एक तरह से संस्कृति की पक्षधरता है एक मास कल्चर (लोक संस्कृति) है तो दूसरी एलिट कल्चर आभिजात्य कल्चर दो रूपों में रूपायित किया है। आइन्सटीन ने म्त्रउब2का सूत्र देकर आभिजात्य अर्थात् म त्र एलिट जाति = द्रव्यमान एवं प्रकाशवर्ष[2] (प्रकाश का वेग) के रूप में समाज शास्त्रीय व्याख्या की गयी है जो व्यष्टि एवं समष्टि रूप में व्यक्तिवाद एवं सामान्य जनता का परिचायक है।

यह हाई आर्ट एवं लो आर्ट के रूप में काव्यजगत् एवं जीवन जगत् में विद्यमान है। जो भारतीय संस्कृति में चूहा और नाग रूप में, नाग और गरुड़ रूप में, राम एवं रामसिंह रूप में दो वर्गों में प्रतीकात्मक रूप में विद्यमान है। आभिजात्य वर्ग नर व्याध रूप में जोंक की तरह 'युग देवता' बनकर यक्ष 'नर पिशाच' के रूप में खून पीता है तथा मनुष्य का प्राणान्त कर देता है – 'युग का देवता' कविता में कविवर चंद्रप्रकाश सिंह ने नर पिशाच'' आभिजात्य वर्ग का वर्णन किया है –

'तारों की माला पहने एक निष्प्राण देवता दिन–रात
तपस्या किया करता है, वायु, पानी, अग्नि, प्रकाश

इन सब पर उसका अधिकार है यदि श्रद्धा से कोई
उसके चरण छू लेता है तो वह क्रुद्ध हो उठता है
हाथों से हीन होने पर भी पकड़ लेता है
मुख विहीन होने पर भी खून चूस लेता है
और तब तक नहीं छोड़ता, जब तक उसके प्राण निकाल नहीं लेता।'[2]

3. बहुलवादी – बहुजन समाज के उत्थान के लिए सरकार ने अनेकों व्यवस्थाएँ की थी किन्तु जाति भेद, भाषा भेद, क्षेत्रभेद, चार वर्ण भेद, संप्रदाय भेद, धर्म भेद एवं अल्पसंख्यक, दलित, पिछड़ा वर्ग के विपक्ष में बहुलवादी पक्षधरता का नकाब ओढे सभ्यजन या संभ्रात मात्र लोक कला को 'किन्नर सभ्यता' कहकर परिहास करते हैं।क्योंकि बहुलवाद की वकालत करने वाला सभ्यजन है। उनके लिए लोक भाषा, लोक संस्कृति मात्र मनोरंजन की वस्तु है। उनकी नीति, राजनीति प्रजातन्त्र को अराजकतावादी। बनाने की होती है उनसे याचना करना मात्र ख्याली पुलाव है – 'याचना' कविता में कुँवर प्रकाशसिंह चौहान ने उद्धृत किया है –

गरजती हुई उत्तल तरंगों को देखकर
हमने जल के स्वामी वरुण की बड़ी प्रार्थना की
याचना करते हुए कहा भगवान हमें एक जलयान दे दो।
वे मुसकराते हुए बोले, पुत्र तुम्हारी मनोकामना पूर्ण होगी।
लेकिन तब जब तक तुम अपने बाहुबल से तैर
कर समुद्र को पार कर लोगे।'[3]

बहुलवाद की वकालत करने वाले बहुभाषा भाषी है – वे अपनी वाणी, मन, वचन से प्रतिपल बदलते रहते हैं 'मृगतृष्णा' कविता में बहुलवादी के व्यवहार को कवि ने उद्धृत किया है –

'व्यास से व्याकुल होकर सामने देखा
एक सागर लहरा रहा था
उत्सुकता से वहाँ पहुँचे तो
रेत का जलता हुआ रेगिस्तान मिला।'[4]

आज बहुलवादी झगड़े इतने व्यापक स्तर पर हो गये हैं शैव–शाक्त–वैष्णव–बौद्ध–जैन एवं मुस्लिम की विचारधाराओं के झगड़े निर्मित किये गये हैं।
इसका कारण देव जाति की बहुसंस्कृतियों का मिश्रण है – ये देव जाति की दस संस्कृतियाँ–अमरकोष में अमरसिंह ने उद्धृत की है–
'भूत–पिशाच,यक्ष–रक्ष–गन्धर्व–किन्नर–वज्रसिद्ध–विद्याधर–देव–चारण।' (अमरकोष) से सभी जातियाँ आर्य जाति का प्रारम्भ से आज तक का विकास है। किंतु अनार्य उनमें नहीं है उनकी अलग संस्कृति थी जिन्हें द्रविड़, सहजसिद्ध, कोल एवं आस्ट्रिक पर्याय रूप में जाना जाता है जो एक ही है किन्तु दलित है उत्तरापेक्षी हैं।

4. प्रजातन्त्र की सुरक्षा के खतरे – अभिजन नहीं चाहते हैं कि एक समाज हो जिसमें भाई चारा हो, प्रेम हो, एक शुद्ध मानवतावादी सोच हो, एक होने का भाव हो, उसने 'भारतमाता' को शापित कर रखा है वह कृष्ण वर्णी माँ अर्थात् काली माँ प्रत्येक नगर निगम की सड़कों पर झाड़ू निकाल रही है वह आँखों पर पट्टी बाँध कर इन्द्र रूपी कृष्णचंद्र को शक्ति रूपा संस्थित होकर शाप देना की घोषणा करती है –

कृष्ण सुनो! यदि मेरी सेवा में बल है/संचित तप में धर्म है/तो सुनो कृष्ण/.....सारा तुम्हारा वंश/उसी तरह पागल कुत्तों की तरह/एक–दूसरे को परस्पर फाड़ खाएगा। तुम खुद उनका विनाश करके कई वर्षों बाद/किसी घने जंगल में/साधारण व्याघ्र के हाथों मारे जाओगे।[5] यहाँ पर प्रजातन्त्र का प्रहरी स्वयं विधर्मी है स्वयं जातिवादी श्रेष्ठता की बू आती है क्योंकि यह यक्ष (प्रेत) है वह एक निरीह प्राणी का खून को पीने का आदी है। अन्धा युग का 'कृष्ण' कृष्ण वर्णी नहीं है वह कृष्ण चंद्र है अर्थात् इन्द्र है। कृष्ण–ग्वालिन को छेड़ने वाला नहीं है, छेड़ने वाला तो कृष्ण चंद्र है यहाँ 'प्रबंध वक्रता' द्वारा पात्र 'कृष्ण' को वाक्छल द्वारा विच्छिति पूर्ण ढंग से नव्य कृष्ण अर्थात् इन्द्र को स्थापित किया गया है अर्थात् वह कृष्ण न होकर कृष्णचंद्र, इन्द्र है। क्योंकि द्रविड़ नंद वंश के कृष्ण को शक्र वंशी इन्द्र ने कारागृह (काला घर) में डाल दिया था। अतः कृष्ण और इन्द्र संज्ञा विचलन है। कृष्ण पर नव्य कृष्ण या उत्तरकृष्ण का उपस्थापन है। अतः छलिया इन्द्र है। छल–छद्म षड्यन्त्रकारी इन्द्र जाल इन्द्र का है। कृष्ण तो योगिराज है। इन्द्र को पुराख्यान में कृष्ण का हन्ता या हत्यारा जरा (जार) व्याध के रूप में बताया गया है (अन्धायुग) धर्मवीर भारती ने संज्ञा विचलन द्वारा कृष्ण पर इन्द्र की अवतारणा की है। जो पाठ, उपपाठ या उत्तर पाठ के रूप में, काण्ड या उत्तर काण्ड के रूप में 'अन्धा–युग' में नाटक के समापन में 'प्रभु की मृत्यु' जार (इन्द्र) शाही ने कृष्णवंशियों को श्रीकृष्ण या रूसी (जार) कृष्ण मार डालते हैं। पूरा काल में जिस प्रकार द्रविड़ों का प्रजातन्त्र था, नंद बाबा के नौ नागवंश थे उनको पाताल या गर्त्त में भेजकर विनिष्ट किया था वहीं यूरोपियन इन्द्र संस्कृति आज के प्रजातन्त्र को छाया रूप में लील रही है। वहीं नर–व्याघ्र सभ्य शैली में नरसिंह अवतार अमानुषिक वृत्ति द्वारा पशुपति बन कर सत्यवादी युधिष्ठिर से पूर्ण सत्य बोलने से पहले हल्लाबोल या नगाड़ा बजा देता है। आज उस सवर्णवादी कृष्णपार्श्व नकुल या विधर्मी की कपटपूर्ण नीति जिसमें प्रतिहिंसा, अनीति एवं प्रतिशोध अन्धबर्बर पशु (नरसिंह) पुनः जागृत हो गया है जो पुनः नारी को पांचाली (पाँच व्यक्तियों की पत्नी) तथा सुधो–धन या घनानंद को 'दुर्योधन' घोषित कर नव्य उत्तरकाण्ड गढ़ना चाहते हैं। जिसमें प्रजातन्त्र का विनाश निश्चित है। आज का अभिजन त्रिक् दर्शन ऊँ अर्थात् नव्य पूंजीवाद द्वारा सत्, रज एवं तम माइण्ड, मनी एवं मसल तीनों मकार शक्ति या आसुरी शक्ति सम्पन्न है। वहीं असुर है, दैत्य है किंतु बदनाम नंदवंशी के योगी ग्वाल या मेघ–ग्वाल द्रविड़, कृष्ण–ग्वाल को कलुषित करता है। जो आज का सर्वहारा है, दलित है। मात्र नस्लवादी या जातिवादी भेदभाव जो कृष्ण (काले) तथा इन्द्र (लाल या पीत या गोर) वर्ण का मिथ्या भ्रम उदात्त पुराने मॉडल लड़ने–झगड़ने में नव्य रूप धारण कर रहे हैं।

'पहचान वही कलेवर बदला है
व्यवस्था पुरानी है अन्दाज बदला है
सोच वही किंतु दृष्टि बदली है। रंग बदला है।'

प्रजातन्त्र में अराजकता का कारण इन्द्र का एपिरूस (उत्तरकुरु) अर्थात् श्रेष्ठ देश का होना अर्थात् ऋस्, रीस, रास, रूस, रस रूष – रूस। पु–रूस। रिसि – रूसी, लाल रंग वाले, तिरंगा में उत्तर (ऊपर) का रंग – रूसी या लाल है –

'मेरा जूता है जापानी, पतलून इंग्लिस्तानी।
सिर पर लाल टोपी रूसी, फिर भी दिल है हिन्दुस्तानी।'

इस देश का ताज 'लाल टोपी' रूसी है, वहाँ मास्को या 'मास्क' छद्मरूप में फरेब नाट्यरूप की परम्परा है, लाल झण्डा ऊपरी रंग, लाल क्रान्ति, रक्तबीज, लाल या भगवा रंग, लाल मीनार 'अरुण यह मधुमय देश हमारा' अरुण एवं वरुण दोनों इन्द्र के लाल वर्ण के पर्याय हैं। कुँवर प्रकाश सिंह चौहान ने लिखा है –

मैं लिये लाल झण्डा कर में

है लाल वसन है लाल क्रान्ति
ऋषि कहते थे ललिता अरुणा
नेता कहते हैं लाल क्रांति।[6]

5. मीडिया – अभिजन द्वारा प्रसारित नव्य सूचना, प्रौद्योगिकी संचार माध्यम है जो 'हल्लाबोल' में विश्वास करता है। सत्य से ध्यान हटाता है 'धर्म' भविष्यवाणी के झाँसे द्वारा 'क्रोनोलोजी' अर्थशास्त्र को मजबूत करने के लिए अपने 'पाशे' फेंकता है। आज मीडिया एक हथियार की तरह हैं जो प्रतिक्रियावादी है। सभी चैनल पुराण कथाएँ जो जल्पक हैं ऊहात्मक, रूपकमयी है एवं आलंकारिक या चमत्कारिक स्वांग है उनको प्रसारित करते हैं जिसमें श्री कृष्ण (इन्द्र) की लीलाएँ, (कृष्ण की लीला नहीं जो निर्गुण ब्रह्म की हैं।) जो अस्सी हजार अनार्य नाग ललनाओं का जारशाही शासक इन्द्र की लीला है। आगे कुछ है .....उपदेश। पर्व में महिमामण्डन, मिथकीय प्रतीक जो गल्प है जो अन्धविश्वासों में धकेलते हैं। संस्कारों की चर्चा करते हैं जिसमें जात कर्म (जातिवाद) एवं नामकरण (जातिवाद) से मृत्यु तक सोलह–क्रिया–काण्ड तक 'अर्थ' दक्षिणा के साधन हैं। जन्म के साथ 'सुतक' तथा मृत्यु पर प्रेतों के 'टेवे' पिशाच (पिचक) लगाकर यजमान को यज्ञ कर्त्ता रौरव नर्क में धकेल देता है।

6. औपनिवेशिक गुलामी – पश्चिमी उपनिवेशिक गुलामी का यह दौर है यह नव्य उपनिवेशवाद का जादुई तमाशा है वह तीसरी दुनिया, ग्लोबल मैन, सुपरमैन के रूप में छद्म रूप में भगवान बनकर भारतीय नारद से यज्ञ आहुति के लिए यज्ञ सामग्री माँग रहा है। भारत अमेरिका, फ्राँस एवं रूस का उपनिवेशक है।

7. नस्लवादी भेदभाव – सवर्ण (सुनहरे) वर्ण के वरुण (जिउस) तथा कृष्ण वर्ण के डेमन दोनों की लड़ाई राजा एवं रंक की भाँति अनादिकाल से है। 'वरुण' पाठ है उसका उपपाठ 'इन्द्र' है नव्यपाठ। त्रिक सत् रज एवं तम (ऊँ) माइण्ड, मनी एवं मसलस में राम की सीता का हरण करना – मृग तृष्णा (माइण्ड) है तथा इन्द्र द्वारा छद्म रूप में सोने का मृग बनना (मनी) अर्थात् रज तथा सीता या शचि के साथ उपभोग करना तम या मसलस का नव्य पाठ है। जो नस्लभेद – राम कृष्ण वर्णी है तथा इन्द्र सुवर्णवर्णी का ही नया पाठ है।

8. नव्य पूंजीवाद – उपनिवेशिक देशों द्वारा रूप या सौन्दर्यवादी चिंतन द्वारा वस्तु को नव्य रूप में परोसने का काम करते हैं यह नव्य सांस्कृतिक साम्राज्यवादी अवधारणा है।

9. शिक्षण संस्थाओं के खतरे – बाजारवाद, विज्ञानवाद के कारण 'सूचना तन्त्र' ने संस्थानों, व्यवस्थाओं, पुरानी विचारधाराओं पर प्रश्न चिह्न लगा दिये हैं आज छात्र विद्रोह कर रहे हैं शास्त्रीय तथा नयी समीक्षा का भी प्रबल विरोध हो रहा है।

10. विखण्डनवाद – जाक देरीदा – ने तकनीकी क्रांति के माध्यम से विनिर्मितवाद द्वारा रूप एवं प्रकृति को बदल कर विखण्डनवाद थियरी ऑफ डीकांस्ट्रशन की स्थापना की है।

11. उत्तरसंचरनावाद – केन्द्रवाद को तोड़कर विकेन्द्रीयतावाद की स्थापना। यह अनिश्चयवादी अवधारणा है। यह 'कोरोना वायरस' की तरह व्यर्थ का आतंक है यह 'उत्तर' में अधिक रोयी च्वेज शब्द उत्तर आधुनिक, **उत्तर** काण्ड, **उत्तर** कुरु, उत्तर क्या है? 'कोरोना' कं–रोदति? व्यर्थ में क्यों रो रहे हो। 'सार्वभूमि' किन्तु प्रश्न किसका है? यक्ष का (प्रेत) है, अतः यक्ष से प्रश्न कौन करे? तथा उत्तर में काण्ड है, मृत्यु है, पाठ है, उपपाठ है विलासा है, आश्वासन है, भरोसा है मात्र छलावा।

संदर्भ सूची

1. क्षितिज–कुँवर श्री प्रकाशसिंह, खीरी जिला परिषद् प्रिंटर्स एण्ड स्टेशनर्स, लखीमपुर खीरी (उ.प्र.) संस्करण–1968, पृ.सं. 9
2. क्षितिज–कुँवर श्री प्रकाशसिंह, खीरी जिला परिषद् प्रिंटर्स एण्ड स्टेशनर्स, लखीमपुर खीरी (उ.प्र.) संस्करण–1968, पृ.सं.10
3. क्षितिज–कुँवर श्री प्रकाशसिंह, खीरी जिला परिषद् प्रिंटर्स एण्ड स्टेशनर्स, लखीमपुर खीरी (उ.प्र.) संस्करण–1968, पृ.सं. 8
4. क्षितिज–कुँवर श्री प्रकाशसिंह, खीरी जिला परिषद् प्रिंटर्स एण्ड स्टेशनर्स, लखीमपुर खीरी (उ.प्र.) संस्करण–1968, पृ.सं.16
5. 1अन्धा युग – धर्मवीर भारती, पृ.सं. 102
6. लाल क्रांति – कुँवर प्रकाशसिंह चौहान, प्रकाश प्रकाशन मण्डल, नेवादा, कमलापुर–सीतापुर, (उ.प्र.) संस्करण–प्रथम–2002, पृ.सं. 35